मंजिल ऐप्लिकेशन (MAP)

मंजिल ऐप्लिकेशन (MAP), इस प्रोजेक्ट परियोजना की निगरानी करने और सही फैसले करने में मदद करने वाला अत्याधुनिक उपकरण है। MAP के माध्यम से लड़कियों को एक तीन स्तर वाली मैचिंग प्रक्रिया द्वारा अपने लिये सही कौशल पाठ्यक्रम और नौकरी के अवसरों का चुनाव करने में सहायता मिलेगी। अपनी इन्हीं विशेषताओं के साथ MAP, इस प्रोजेक्ट से जुड़े लोगों, इसके लाभार्थियों और रोजगार देने वाली कंपनियों के लिए संपूर्ण समाधान पेश करता है।

Manzil

संपूर्ण स्किलिंग गाइड
सभी सरकारी और निजी कौशल योजनाओं का विवरण

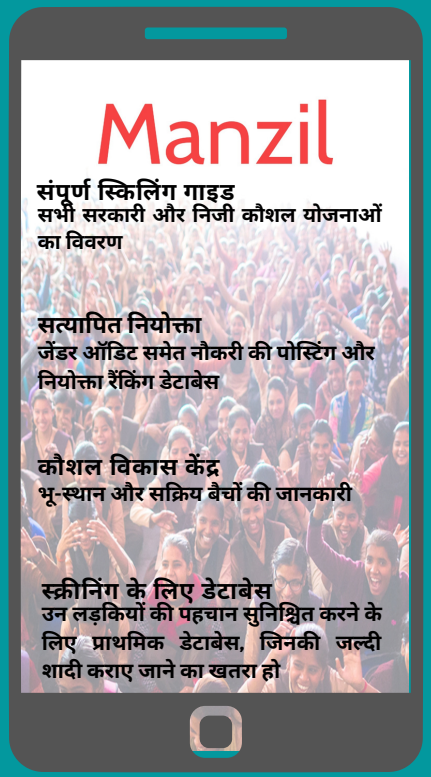

सत्यापित नियोक्ता
जेंडर ऑडिट समेत नौकरी की पोस्टिंग और नियोक्ता रैंकिंग डेटाबेस

कौशल विकास केंद्र
भू-स्थान और सक्रिय बैचों की जानकारी

स्क्रीनिंग के लिए डेटाबेस
उन लड़कियों की पहचान सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिक डेटाबेस, जिनकी जल्दी शादी कराए जाने का खतरा हो

"पहले मुझे आधुनिक तकनीकियों से थोड़ा डर सा लगता था, लेकिन अब मैं MAP के बिना काम ही नहीं कर सकती। मुझे कोई नोटबुक ले जाने की आवश्यकता नहीं होती। मेरी सभी गतिविधियों को MAP में ट्रैक किया जाता है। मैं 20 गांवों की करीब 600 लड़कियों को ट्रैक करती हूं। मैंने इस ऐप्लिकेशन के माध्यम से 120 लड़कियों को सीधे कौशल पाठ्यक्रमों में भर्ती करवाया है।"

अर्चना, कम्युनिटी मोटिवेटर

हमारे साथ जुड़ें

कौशल केंद्र: फील्ड मॉटिवेटर्स (सामुदायिक प्रेरकों) की हमारी टीम, पिछड़े तथा वंचित समुदायों की युवा लड़कियों को जुटाने के लिए जमीन स्तर पर काम करती है।

कॉर्पोरेट और निजी क्षेत्र के नियोक्ता: हम युवा लड़कियों की आकांक्षाओं को उद्योग की आवश्यकताओं से जोड़ते हैं, ताकि वो नौकरी करती रहें। हम कंपनियों की ज़रूरतों का आंकलन करके सबसे योग्य और प्रशिक्षित उम्मीदवार उपलब्ध करवाते हैं।

IPE GLOBAL
Expanding Horizons. Enriching Lives.

आईपीई ग्लोबल लिमिटेड
दिल्ली कार्यालय: आईपीई ग्लोबल हाउस, बी-84, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली - 110024
जयपुर कार्यालय: आईपीई ग्लोबल लिमिटेड, 10, तीसरी मंजिल, सिग्नेचर टॉवर, लाल कोठी
उदयपुर कार्यालय: आईपीई ग्लोबल लिमिटेड, नाहर निवास, 8, प्रताप मार्ग, शिक्षा भवन सर्कल के पास, उदयपुर
डूंगरपुर कार्यालय: आईपीई ग्लोबल लिमिटेड c/o दीपक शर्मा, गांधी आश्रम, अविनाश मोटर्स के पीछे, न्यू कॉलोनी, बाइ पास रोड, डूंगरपुर
टेलीफोन: +91 11, 40755900, +91-8233700233

हमारे सहयोगी

CHILDREN'S INVESTMENT FUND FOUNDATION
RCSE
SMILE FOUNDATION
navgurukul
AVALON
aws re/start
GLOBE TOYOTA

मंज़िल

औद्योगिक मांग के अनुसार व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से लड़कियों का सशक्तिकरण

मंजिल की आवश्यकता

16% लड़कियां (15-19 साल), 18 साल से पहले ही ब्याह दी जाती हैं राजस्थान में

22% बालिका वधुएं (2015-16) तक मां बन चुकीं थीं

84% महिलाओं के काम के घंटे अवैतनिक श्रम पर खर्च होते हैं

26% व्यावसायिक प्रशिक्षण और यौन शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों के किशोर गर्भावस्था के जोखिम में की कमी दर्ज की गई

क्या है यह परियोजना?

मंजिल युवा लड़कियों (14-21 वर्ष) को गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक शिक्षा और आर्थिक अवसरों तक पहुंचने में सक्षम बनाता है। ताकि वे स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें और अपने फैसले खुद ले सकें। इससे उनके कम उम्र में विवाह और उसके बाद कम उम्र में पहले गर्भधारण को टाला जा सकता है। यह परियोजना राजस्थान के 6 जिलों के 1000 गांवों में चलाई जा रही है।

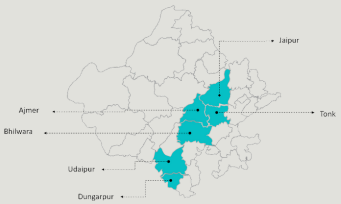

130000 लड़कियों को कौशल प्रशिक्षण

50000 लड़कियों को नौकरी से जोड़ाना

Sources:
National Family Health Survey (NFHS-4), 2015-16
Time use in India 2019, National Statistics Office
Bandiera et al, Washington DC, USA;World Bank 2012

रणनीति और दृष्टिकोण

यह परियोजना कौशल विकास से लेकर रोजगार प्रदान करने तक के चक्र को पूरा करती है। इसके तहत युवा लड़कियों की आकांक्षाओं को उद्योग की आवश्यकताओं से जोड़ा जाता है। उन्हें बातचीत/संवाद करना, समस्या का समाधान करना और सही फैसले लेने में सक्षम बनाने जैसे कौशल सिखाए जाते हैं। परियोजना के अंतर्गत यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि लड़कियां कौशल पाठ्यक्रमों को बीच में अधूरा न छोड़ें और उन्हें ऐसी नौकरियां दिलाई जाती हैं, जहां उन्हें अपना करियर बनाने और जीवन में आगे बढ़ने का मौका मिले। मंज़िल की मज़बूत नींव समाज पर आधारित है।

पिछड़े वर्ग की युवा लड़कियों की पहचान करना

लड़कियों और उनके परिवार की काउंसेलिंग देना

कौशल पाठ्यक्रमों में लड़कियों के दाखिले में मदद करना

रोजगार कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से लड़कियों को नौकरी के लिए तैयार करना

लड़कियों को नियोक्ताओं से जोड़ना

मंज़िल का प्रभाव

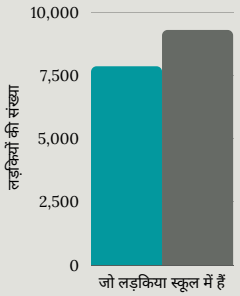

स्कूल जाने वाली लगभग 18000 लड़कियों का व्यावसायिक पाठ्यक्रम में दाखिला

स्कूल न जाने वाली 6500 लड़कियों का कौशल पाठ्यक्रमों में दाखिला

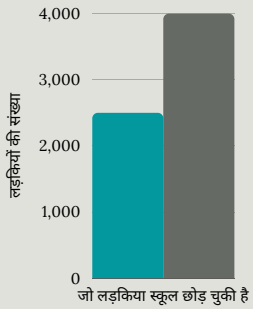

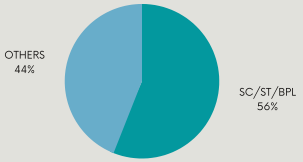

पाठ्यक्रम में दाखिला लेने वाली ऐसी लड़कियां जो स्कूल नहीं जातीं उनमें 56% लड़कियां उपेक्षित समुदायों से है

"मैंने भीलवाड़ा से जनरल ड्यूटी असिस्टेंट (जीडीए) का पाठ्यक्रम किया। मैंने जयपुर के एक अस्पताल में काम करने के लिए पहली बार अपने गाँव से बाहर कदम रखा। अपने माता-पिता की ओर से शादी करने के दबाव के बावजूद अब मुझे विश्वास है कि मैं अपने फैसले खुद ले सकती हूं।"

कशिश (उम्र-18 साल)

ऐसा नहीं कि मंजिल की चेंजमेकर हमेशा युवा लड़कियां ही होती हैं। उदयपुर के कजरबाड़िया गांव के 81 वर्षीय उंकर डांगी ने अपनी पोतियों को फील्ड एक्जिक्यूटिव पाठ्यक्रम के लिए उदयपुर से जयपुर भेजने के लिए लड़ाई लड़ी।